हांरे वाला अगिन उठे

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।
स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार।।

कुकरम कसाब जुध कई करावियां, पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।
जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया, खरा ने खराब ए खलक खुआर।।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार।।

कहे महामती हूं गांऊ मोहोरे थई,पण विमुख विधो वीती सहु माहें नर नार।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।।